धर्मनाथ जिन पूजन

स्थापना

(नरेन्द्र छन्द)

धर्मनाथ जिनवर चरणों में, अपना शीश झुकाता।
सूरज से भी तेज उजाला,नाथ आपमें पाता।।
कृपा दृष्टि मिल जाये तो मैं, बिना पंख उड़ सकता।
मध्यलोक से लोक शिखर तक, क्षण भर में जा सकता।।
यदि आप मम गृह आये तो, कर्मो से लड़ पाऊँ।
शाश्वत मुझमें ठहर गये तो, तुम जैसा बन जाऊँ।।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(तर्ज–पाँचों मेरु असि.....)

शुद्ध ज्ञान का जल भर लाया, धार देत त्रय शान्ति कराय।
परम जिनराय, जय–जय नाथ परम सुखदाय।।
आत्म ध्यान का करूँ उपाय, धर्मनाथ जिनवर गुणगाय।
परम जिनराय, जय–जय नाथ परम सुखदाय।1।।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
निज स्वभाव चंदन सुखदाय, मन को अतिशय तृप्त कराय।
परम जिनराय, जय–जय नाथ परम सुखदाय।
आत्म ध्यान का करूँ उपाय, धर्मनाथ जिनवर गुणगाय।
परम जिनराय, जय–जय नाथ परम सुखदाय।।2।।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
संसारिक पद नहीं सुहाय, उत्तम अक्षय ध्रुव पद पाय।
परम जिनराय, जय–जय नाथ परम सुखदाय।।
आत्म ध्यान का करूँ उपाय, धर्मनाथ जिनवर गुणगाय।
परम जिनराय, जय–जय नाथ परम सुखदाय।।3।।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्..... ।
शील पुष्प की सुरभि प्रदाय, कामदेव को शीघ्र भगाय
परम जिनराय, जय–जय नाथ परम सुखदाय।।
आत्म ध्यान का करूँ उपाय, धर्मनाथ जिनवर गुणगाय।
परम जिनराय, जय–जय नाथ परम सुखदाय।।4।।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
वंदन तीनों कालजिनाय, क्षुधा रोग अविलंब नशाय।
परम जिनराय, जय–जय नाथ परम सुखदाय।।
आत्म ध्यान का करूँ उपाय, धर्मनाथ जिनवर गुणगाय।
परम जिनराय, जय–जय नाथ परम सुखदाय।5।।
ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ज्ञान ज्योति शाश्वत जल जाय, कर्म हवायें बुझा न पाय।
परम जिनराय, जय–जय नाथ परम सुखदाय।।
आत्म ध्यान का करूँ उपाय, धर्मनाथ जिनवर गुणगाय।
परम जिनराय, जय–जय नाथ परम सुखदाय ।।6।।

ऊँ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
धर्म धूप साधन बन जाय, अष्ट कर्म विध्वंस कराय।
परम जिनराय, जय-जय नाथ परम सुखदाय।।
आत्म ध्यान का करूँ उपाय, धर्मनाथ जिनवर गुणगाय।
परम जिनराय, जय-जय नाथ परम सुखदाय।।7।।
ऊँ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
भक्ति भाव से जिन गुणगाय, प्रभु कृपा से शिव फल पाय।
परम जिनराय, जय-जय नाथ परम सुखदाय।।
आत्म ध्यान का करूँ उपाय, धर्मनाथ जिनवर गुणगाय।
परम जिनराय, जय-जय नाथ परम सुखदाय।।8।।
ऊँ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
शुभ भावों का अर्घ्य बनाय, पद अनर्घ्य जिनवर दर्शाय।
परम जिनराय, जय-जय नाथ परम सुखदाय।।
आत्म ध्यान का करूँ उपाय, धर्मनाथ जिनवर गुणगाय।
परम जिनराय, जय-जय नाथ परम सुखदाय।।9।।
ऊँ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(सखी छंद)

सर्वार्थसिद्धि तज आये,सुरबाला मंगल गाये।
तेरस वैशाख वदी है, माँ सुव्रता उर हर्षी है।।1।।
ऊँ हीं वैशाखकृष्णत्रयोदश्यां गर्भमंगलमंडिताय ऊँ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सुद माघ त्रयोदशि आयी, प्रभु जन्मोतसव सुखदायी।
नृप भानुराज हर्षाये, तीर्थंकर सुत को पाये।।2।।
ऊँ हीं माघशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय ऊँ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जब जन्मोत्सव खुशियाँ थी, तब उल्कापात हुयी थी।
वैराग्य धरे जिनराजा, एक लाख संग मुनिराजा ।।3।।
ऊँ हींमाघशुक्लत्रयोदश्यां तपोमंगलमंडिताय ऊँ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्रायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जब पौष पूर्णिमा आयी, प्रभु केवलज्ञान उपायी।
प्रभु राजे हैं पद्मासन, है दिव्य आपका शासन।।4।।
ऊँ हीं पौषशुक्लपूर्णिमायां केवलज्ञानप्राप्ताय ऊँ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सुदि ज्येष्ठ चतुर्थी आयी, शिरमा वरी जिनरायी।
सूदत्त कूट मन भाया, सम्मेद शिखर सिर नाया।।5।।
ऊँ हीं ज्येष्ठशुक्लचतुथ्र्यां मोक्षमंगलमंडिताय ऊँ ह्रीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य

ऊँ हीं अर्हं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

दोहा

धर्मनाथ तीर्थेश के, गुण है नंतानंत।
ग्ुणमाला कंठे धरे, होता भव का अंत।।1।।

(चौपाई)

धर्मनाथ जिनवर को वंदू{, धर्म विधायक विभुवर वंदूँ।
भानुराज सुत को अभिनंदूँ, मात सुव्रता नंदन वंदूँ ।।2।।
चार ध्यान उपदेशक वंदूँ, धमध्यान आराधकवंदूँ।

शुक्लध्यान के धारक वंदूँ, प्राणिमात्र उपकारकवंदूँ।।3।।
कूट सुदत्त अधीश्वर वंदूँ, सिद्धालय के वासीवंदूँ।
कर्म अरिंजय स्वामीवंदूँ, मृत्युजंय अभिनामी वंदूँ।।4।।
चिन्मय चिदानंद जिन वंदूँ, परमानंद जिनेश्वर वंदूँ।
परम शांत मूरत अभिवंदूँ। महापूज्य त्रिपुरारि वंदूँ।।5।।
पंचम गति के दायक वंदूँ, इंद्रिय रहित जिनेश्वर वंदूँ।
काय रहित निष्कायकवंदूँ, योग रहित योगीश्वर वंदूँ।।6।।
वेद रहित जिन लिंगी वंदूँ, रहित कषाय जिनेश्वर वंदूँ ।
ज्ञानी परम संयमी वंदूँ ,केवलदर्शी जिन को वंदूँ।।7।।
लेश्यातीत भाव को वंदूँ, भव्यातीत दशा को वंदूँ।
क्षायिक समकित जिन को वंदूँ, सैनी रहित मार्गणा वंदूँ।।8।।
सदा अनाहारी प्रभु वंदूँ, ज्ञान शरीरी जिनवर वंदूँ।
पंद्रहवें तीर्थेश्वर वंदूँ, धर्मनाथ अखिलेश्वर वंदूँ।।9।।
ऊँ हीं श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

हे धर्म दिवाकर, गुण रत्नाकर, भव-भव का संताप हरो।
निज पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।